Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 03, (अगस्त, 2024)
पृष्ठ संख्या 35–36

बारिश की हर बूँद का खेत में उचित प्रबंधन

नरेंद्र कुमार[1], हरदीप कलकल[1] एवं आशीष कुमार[2]

[1]कृषि विज्ञानं केंद्र, सिरसा,

[2]शोध छात्र, मृदा और जल अभियांत्रिकी,

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हरियाणा, भारत।

Email Id: narendergoswami17@hau.ac.in

एक बारिश की बूँद का खेत में गिरना किसानों के लिए वरदान होता है। यह बूँद फसलों को आवश्यक जल प्रदान करती है, जिससे उनकी वृद्धि और विकास में सुधार होता है। इसके अलावा, यह भूजल स्तर को भी बढ़ाने में मदद करती है, जो आने वाले समय में जल संसाधनों की स्थिरता सुनिश्चित करती है। मिट्टी में नमी बढ़ने से सूक्ष्म जीवों की गतिविधि भी बढ़ जाती है, जो मिट्टी की उर्वरता में सहायक होते हैं।

बारिश का खेत में संरक्षण कृषि और पर्यावरण की स्थिरता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब बारिश का पानी खेतों में संरक्षित किया जाता है, तो यह जल संसाधनों की बचत और फसलों की बेहतर पैदावार सुनिश्चित करता है। यह प्रक्रिया न केवल पानी की बर्बादी को रोकती है, बल्कि मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखने में भी सहायक होती है। बारिश के पानी का संरक्षण करने के कई तरीके हैं। इनमें जल संचयन प्रणाली जैसे तालाब, कुएं, और वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर का निर्माण शामिल है। बहुत बड़े बड़े जल संरक्षण के तरीको को अपनाने की वजाय हमे बरसाती जल को खेत में ही सरंक्षित करने की आवश्यकता है।

बरसाती जल को खेत में सरंक्षित करने के कुछ उपाय

1. **दो खेतो के बिच में नाली बनाकर** :– दो खेतो के बिच में नाली बनाकर बरसात के जल को खेतो में सरंक्षित किया जाता है। बरसात का पानी नाली में एकत्रित हो जाता है। नालियां 60.75 से0 मी0 गहरी होनी चाहिए ताकि बरसात का पानी रिसाव से खेत की मृदा की निचली सतह में चला जाये। बरसात प्रारंभ होने से पहले इन नालियों को अच्छे से साफ कर देना चाहिए। ऐसा करने से पानी तेजी से खेतो में रीश जायेगा।
2. **गडढे बनाकर जल को रोकना** :– बरसात शुरू होने से पहले यदि खेत खली हो तो उस पर जगह जगह छोटे छोटे गडढे बना देने चाहिए। ये गडढे पानी को एकत्रित करके उसे खेतो में

रीशने का समय बड़ा देंगे जिससे ज्यादा से ज्यादा पानी जमीन में जायेगा। ये मृदा सरक्षण का भी अच्छा उपाय है।

3. **मेड़बंदी को मजबूत करके** :– बरसात शुरू होने से पहले खेतों के चारों तरफ की मेड को मजबूत कर देना चाहिए। इस से जो भी बरसात का पानी खेत में बरसेगा वो खेत में ही रहेगा। मेड़बंदी दूसरे खेतों से आने वाले पानी को भी रोकती है। ये जलभराव को रोकने का अच्छा उपाय है। दूसरी जगह बरसा हुआ पानी खेतो में नहीं घुस पाता। बहते हुए पानी के साथ आने वाले अनेक खरपतवार का भी बचाव हो जाता है।
4. **खेत की सतह को बरसात के बाद ढक करः**– बरसात के बाद जल मुख्यतः वाष्पीकरण के कारण जमीन से उड़ जाता है । बरसात के बाद हमारा मुख्या उदेश्य बरसात के पानी को बचाना होता है। इसके लिए, हम जमीन को किसी चीज से ढक देते है। इस से सूरज की किरणे सीधी जमीन पर नहीं पड़ती और वाष्पीकरण कम हो जाता है। कुछ रासायनिक पदार्थ भी इसके लिए इस्तेमाल किये जा सकते है।
5. **गोबर की खाद मिला कर** :– गोबर की खाद मिलाने से मृदा की जल धारण करने की क्षमता बाद जाती है। जिस से पानी मृदा में लम्बे समय तक सुरक्षित रहता है। गोबर की खाद डालने से मृदा का स्वास्थ्य भी सुधरता है। जीवांश खादों के प्रयोग से पौधों की जड़ों का उचित विस्तार होता है जो मिट्टी के कणों को बांधकर रखती है जिससे भूमि कटाव कम होता है। भूमि में जीवांश की मात्रा बढ़ने से भूमि के भौतिक गुणों में सुधार आता है। इससे मिट्टी की जल धारण शक्ति बढ़ती है और भूमि क्षरण कम होता है।
6. **ढाल को काट कर** :– यदि किसी खेत का ढाल अधिक हो तो बरसात का पानी तेज गती से बह कर आगे जायेगा। इस से मृदा कटाव के संभावना बढ़ जाती है। इसे रोकने के लिए हम ढाल को काटकर पानी की गती को कम करते है। ढाल को हम जुताई या किसी हैरो से काट सकते है। ऐसा करने से पानी को मिटटी में जाने के लिए समय अधिक मिल जाता है । मृदा कटाव में भी कमी आती है।
7. **खेतों की जुताई करके** :– खेतों की जुताई खेतो में बरसात को रोकने का सबसे कारगर तरिका है । ऐसा करके हम मृदा के कोशिका छिद्रो को तोड़ देते है। जिस से वाष्पीकरण कम हो जाता है। जुताई से हम खेतों की सतह को ऊबड़ – खाबड़ कर देते है, जिस पर बरसात पड़ती है। बरसात और खेतों की सतह का संपर्क क्षेत्र बढ़ जाता है। जिस से बरसाती पानी अधिक से अधिक खेतो में सरंक्षित रहता है।